ॐ परमात्मा सर्वज्ञ है। ॐ 5/4/2007

ॐ DATE

प्रकृती का अपना एक चक्र चलता रहता है और इसी के अधीन एक नया पत्ता फुटता है, बडा होता विकसील होता पिला होता है, पकता है और गिर जाता है फीर गिरता है, गिर कर खाद बन जाता है। फीर उसी खाद से उस पेड को उर्जा मीलती है, और फिर एक नया पत्ता उस झाड पर उगता है इसी प्रकार का मनुष्य का जिवन है, एक छोटे बच्चे के रूप मे पैदा होता है, एक बालक बनता है बालक से युवक बनता है। युवक संपुर्ण मनुष्य बनता है और बाद वृद्ध होता है और फिर मर जाता है और फिर नया जन्म लेता है, और किसी देश मे और कीसी धर्म मे और कीसी जाती मे और कीसी भाषा मे याने प्रत्येक जन्म के समय आसपास का सब माहोल बदलते रहता है यह माहोल मे शाश्वत कुछ भी नही है लेकीन वह इस माहोल मे ही ~~पकड~~ पकड कर रहता है, जब की यह सब माहोल शाश्वत नही है।

मनुष्य योनी परमात्मा ने दी हुई सर्वश्रेष्ठ योनी है, क्योकी यही वह योनी है। जिस योनी प्रकृती से समरस होकर मोक्ष प्राप्ती संभव है इस प्रकृती के चक्र को चलाने वाली शकती परमात्मा है और "परमात्मा सर्वज्ञ विद्यमान है" यह परमात्मा का रहस्य मनुष्य समझ नही पाता है परमात्मा का एहसास मनुष्य को सामुहीकता मे ही होता है, क्योकी सामुहीकता मे परमात्मा के शकती के स्पंदन बढ जाते है मनुष्य की अनुभुती की संवेदनाऐ कम होती है क्योकी प्राःय वह किसी ना कीसी विचार पर किसी ना किसी विषय पर विचार करते रहता है और यह मनुष्य के द्वारा किया गया विचार मनुष्य को प्रकृती से अलग कर देता है, इसी लीये प्रकृती मे छुपे हुये परमात्मा के स्पंदन को वह महसुस नही कर पाता है और जब प्रकृती मे स्पंदन सामुहीकता मे बडे स्तर पर हो तो भी वह उन स्पंदन को महसुस नही कर पाता है लेकिन उसे उन स्पंदन के सानीध्य मे अच्छा लगता है और वह बार बार जाने अन्जाने मे उन स्पंदन की और खींचा ~~चला~~ चला जाता है

इसी लीये प्राय पहाड के सानिध्य मे चला जायेगा क्योंकी पहाड पर पत्थरो के रूप मे सामुहीकता है, और उस सामुहीकता के स्पंदन उसे अच्छे लगते है कभी वह समुद्र किनारे पर चला जायेगा क्योंकी समुद्र मे भी लाखो पानी के कण सामुहीकता मे है और इन पानी के कणो के स्पंदन मनुष्य को आकर्षीत करते है और इस प्रकार से मनुष्य जाने अंन्जाने मे प्रकृती के सानीध्य मे चला जाता है और उसे वहा अच्छा लगता है वहा पर इसलीये अच्छा लगता है क्योंकी वह जो विचार करते रहता है, वह विचार अप्राकृतीक है वह अप्राकृतीक विचार प्रकृती के सानीध्य मे बंद हो जाते है और वह भी प्राकृतीक हो जाता है और प्राकृतीक हो जाने के कारण ही आनंद की अनुभूती प्राप्त करता है

परमात्मा की शक्ती छोटे छोटे कणो के रूप मे सारी प्रकृती मे ही बिखरी पडी है केवल उन कणो की संवेदनाऐ बडी सुक्ष्म है इतनी हमारी सुक्ष्मता बढ जाये तो वे अनुभव होगी या उनकी सामुहीकता बढ जाये तो वे अनुभव होगी इन दोनो मे से जब कोई स्थीती निर्माण नही होती हमे उन परमात्मा के कणो के चैतन्य का एहसास नही हो सकता है

हम परमात्मा तक पहुचने के दो रास्तो तक पहुचते है, और ये दोनो रास्ते भी संपुर्ण नही है और हम जिवनभर भटकते ही रहते है ये रास्ते नदी के दो किनारे है, जो केवल समुद्र मे जाकर ही मिल पाते है अन्यथा अलग अलग ही होते है यानी यात्रा बडी है, सफर लंबा है, और आज के वर्तमान समय, वर्तमान परीवेश मे यह समाज मे रहते हुये असंभव है और जो आज पहुचे है वे समाज मे नही है

हम सामान्य मनुष्य की बात करना चाहते, मनुष्य एक सामाजीक प्राणी है और वह समाज में रहना है और समाज में रहते हुये यह दोनो मार्ग असंभव है

① पहला मार्ग है भक्ती मार्ग याने आप आपके बाहर परमात्मा का कोई माध्यम चुन लो तलाश कर लो और उसी माध्यम को परमात्मा मानो और उसको परमात्मा समझ कर भक्ती करो और अपना सर्वस्व उसे अर्पण कर दो और कुछ कुछ भी न करो और सदैव परमात्मा आपके बाहर है ऐसा समझो तो आपके भितर का परमात्मा कभी जाना ही नही जायेगा पहचाना ही नही जायेगा, और जिसने भितर के परमात्मा को नही जाना वह बाहर के परमात्मा तक कैसे पहुचेगा और परमात्मा तक पहुचने का अनेक माध्यम है तो आपका हृदय और बंद गया और फिर तो और मार्ग कठीण हो गया, अपने भितर के परमात्मा को न जानते हुये, बाहर के परमात्मा को खोजना ही भक्ती मार्ग है और यह मार्ग आज के परीवेश मे सपुर्ण नही लगता है, क्योंकी ऐसे भक्ती मार्ग मे अपने आप को डुबो लोग सर्व सामान्य लोग नही हो सकते है।

हम समाज मे रहने वाले एक सामान्य मनुष्य के बारे मे विचार कर रहे है, इस प्रकार से भक्ती मार्ग मे सपुर्ण समर्पीत हो सके ऐसे लोग समाज असामान्य लोग कहलायेगे ऐसे असामान्य लोक कुछ नगण्य हो सकते है पर समाज नही हो सकता है हमे एक आध्यात्मीक समाज बनाने का है, तो यह भक्तीमार्ग उसके लीये पर्याप्त नही है

समाज मे एक दुसरा मार्ग है, ईश्वर प्राप्ति का वह है ध्यान मार्ग है। यह मार्ग इस तथ्य पर आधारित प्रत्येक मनुष्य मे परमात्मा का वास है परमात्मा बाहर नही है भितर ही है ध्यान कर के अपने भितर ही परमात्मा है, भितर जा कर उसकी खोज करो और अपने भितर के परमात्मा पर ध्यान केन्द्रीत करो और अपने भितर के परमात्मा की शक्तियो को जगाओ इस पद्धती पर भी कुछ लोग चलते है और वह ध्यान करके अपने भितर के परमात्मा को पा लेते है पर अपने भितर के परमात्मा के अलावा जहाँ परमात्मा है उस परमात्मा की शक्तीयो से वंचीत हो जाते है, याने समाज का यह मार्ग भी परमात्मा के सर्वस्व के दर्शन नही करता है और यह मार्ग भी अधुरा है

इस मार्ग की एक और कठनाई है भितर के परमात्मा तक पहुचा हुआ सद्‌गुरु जब तक आपके जिवन मे नही आयेगा तब तक आपका चित्त कभी भितर की ओर परमात्मा के लीये नही मुडेगा और ऐसे सद्‌गुरु समाज मे नही है वे जंगल मे रहते है। वे समाज मे आयेगे नही सारा समाज जंगल मे जायेगा नही तो यह ध्यान मार्ग कैसे संभव है इस लीये यह ध्यान मार्ग भी एकांकी है और जनसामान्य के लीये नही है सामान्य मनुष्य इतने भितर समाज मे रहते हुये नही जा सकता है क्यो अगर भितर गया तो इतना संवेदनशील हो जायेगा की अती संवदनशीलता के कारण ही समाज मे दुसरे लोगो के दोष ग्रहण करके और बिमारीया ग्रहण करने से उसकी मृत्यु हो जायेगी या तो वह मर जायेगा या जंगल मे निर्जन स्थान पर भाग जायेगा। याने समाज मे नही रहेगा।

DATE

(5)

समाज मे रहने वाले सामान्य मनुष्य के लीये भक्तीमार्ग भी योग्य नहीं है ध्यानमार्ग भी योग्य नही है, तो सामान्य मनुष्य क्या करे? यह प्रश्न खडा होता है आज के वर्तमान समय मे समाज मे रह कर परमात्मा की प्राप्ती का कौनसा सपुर्ण मार्ग है जो मनुष्य समाज मे रह कर अपना सकता है
सबसे पहले मनुष्य को परमात्मा को पाने की इच्छा होनी चाहिये और परमात्मा जो उसके भितर है वह उसके सब से ज्यादा करीब है, उसे वह आसानी से अनुभव कर सकता है इस लीये सर्वप्रथम उस भितर के परमात्मा को पाना चाहिये। लेकीन उसे पाने के लीये जंगल मे जाने की आवश्यकता नही है आप कीसी भितर तक पहुचे हुये समाधीस्थ सद्गुरु का सानिध्य प्राप्त करो और उसे अनुभुती के लीये प्रार्थना सच्चे दिल से करो तो किसी जिवन्त सद्गुरु तक पहुचाने का मार्ग वे खुद ही निकाल देगे और आपके जिवन मे किसी जिवन्त सद्गुरु का आगमन होगा। और उनकी कृपा और करुणा से आपकी भितर की यात्रा प्रारंभ हो सकती है और आप आपके भितर के परमात्मा की अनुभुती कर सकते है यानी भितर की यात्रा प्रारंभ करने के लीये आवश्यक किसी भितर तक पहुचे हुये और भितर के परमात्मा को प्राप्त कीये हुये जिवन्त सद्गुरु की जिवन्त करुणा शक्ती तभी यह संभव है आप भितर की यात्रा प्रारंभ करते है पर साथ मे उस सद्गुरु की करुणा भी आपके साथ होती है इसी लीये उस सद्गुरु के साथ आपका एक आत्मीय संबन्ध स्थापीत हो जाता है और हमे एक आध्यात्मिक सामुहीकता मीलती है यह अनुभुती हमने ध्यान साधना कर के प्राप्त नही की है उस सद्गुरु की करुणा से मीली है।

इस लीये जो भी आध्यात्मीक स्थीती प्राप्त होती है वह उस सदगुरु की कृपा से होती है, और यही भाव के कारण "मैं" का अंहकार नही आ पाता है, क्योकी "मैं" के अंहकार की समाप्ती पर ही सदगुरु की शुरवात होती है क्योकी जब तक हमारे मे "मैं" का अंहकार विद्यमान है, हम हमारे ही जैसे दिखने वाले सामान्य व्यक्ती के बारे मे जान कर उसके सामने कभी झुक ही नही सकते है वास्तव मे देखा जाय तो सदगुरु भी एक निमीत्य है, हम हमारे ही भितर के परमात्मा के सामने झुकते रहते है
हमारा ध्यान अकती सहित ध्यान होता है, हम एक ओर परमात्मा के स्वरूप के लीये सदगुरु को मानते है, और दुसरी ओर भितर की यात्रा चलती रहती है और परीपक्वता आने पर आप सदगुरु मे ही परमात्मा के दर्शन करते है और फीर आप को अनुभव होता है, की "परमात्मा सर्वज्ञ है," प्रत्येक मनुष्य मात्र मे परमात्मा का वास है, लेकीन प्रत्येक मनुष्य मे परमात्मा यह समझने के लीये हमे पहले एक मनुष्य मे परमात्मा का अनुभव लेना पडता है, और वह अनुभूती हम हमारे सदगुरु मे करते है और एक सामान्य साधारण से मनुष्य मे जब इस परमात्मा की अनुभुती करते है, परमात्मा हमारे पास नही आता हम परमात्मा के करीब हो जाते है, और बाद मे प्रत्येक मनुष्य मे ही परमात्मा है यह भाव विकसीत हो जाता है, तो प्रत्येक मनुष्य मात्र की ओर देखने का नजरीया ही बदल जाता है हमे सबके प्रती प्रेमभाव निर्माण हो जाता है फीर सब बाहरी भेद समाप्त हो जाते है

सब मनुष्य के प्रती प्रेम और मैत्रता का भाव निर्माण हो जाता है यह एक अच्छी आध्यात्मीक स्थिती का द्योतक है। मेरे जिवन मे एक सामान्य से मनुष्य मे परमात्मा के दर्शन कर पाया और इसी लीये परमात्मा के करीब जाने का अवसर मीला परमात्मा की अनुभुती पाने का अवसर मीला और इसी कारण "मैं" का अंहकार समाप्त करने मे मदत मीली और विश्वचेतना का माध्यम बनने का अवसर मीला और मुझसे सामान्य आदमी इतना बडी असामान्य विश्वज्ञानी का विश्वस्कर पर कार्य हो सका, बस यही एकमात्र अंन्तर मेरे मे और साधक मे मुझे लगता है मुझे सामान्य मनुष्य मे परमात्मा मिला उन्हे अभी भी नही मिला है इसी लीये उन्हे भी सामान्य मनुष्य मे परमात्मा मीले और वे भी मेरे अनुभुती जैसी अनुभुती करे की परमात्मा सर्वज्ञ है। प्रत्येक मनुष्य मात्र मे तो यह परमात्मा से शुद्ध इच्छा है

परमात्मा सर्वज्ञ है। हमारे मे भी परमात्मा विद्यमान है, लेकीन हमारे मे परमात्मा के अलावा और लक्षित भुतकाल की बुरी स्मृतीयो का कचरा है आसक्ती के विचार है। वह सब अप्राकृतीक है और परमात्मा प्राकृतीक है इसी लीये ये सब विचार हमारे चलते रहेगे तब तक हम प्राकृतीक स्थीती मे नही रह पायेगे और जब तक हम प्राकृतीक सरल नही हो जाते हमारे भीतर का परमात्मा कभी प्रगट नही हो सकता है अप्राकृतीक विचार सदैव प्राकृतीक स्थानो पर जा कर समाप्त हो जाते है इसी लीये साधना करने वाले ऋषी, मुनी प्रकृती के सानीध्य जा कर साधना करते रहते है

आध्यात्मीक क्षेत्र मे सदगुरु को भारतीय संस्कृती मे इस लिये महत्व दिया गया है, जब कभी भी आप किसी गुरु को मानते है याने झुकते है, याने अपने "मैं" के अंहकार को कम करते है, यह "मैं" का अंहकार शरीर और आत्मा के बीच की रुकावट है, और यही "मैं" सकारात्मक व नकारात्मक भाव के बीच की रुकावट है। आत्मा के कारण शरीर है। शरीर के कारण आत्मा नही आत्मा चले जाने के बाद शरीर को कोई नही पुछता है। "मैं" का अहंकार इस शरीर का मैल है, जो चित्त को दुषीत करता है।

सदगुरु रूपी आग के पास आ जाने से अंहकार रूपी "मैं" का कपुर जल जाता है, याने किसी सदगुरु का शिष्य बन जाना एक मैं के अंहकार को विसर्जीत करने की बडी घटना है, इस लीये सदगुरु का प्रयास प्रत्येक शिष्य को गुरुशक्तीयो के सामने झुकाना है क्योकी वह जानता है, गुरुशक्तीया अविनाशी है मेरा शरीर तो नाशवान साधक ने गुरुशक्तीयो के सामने झुकना चाहीये। एक साधक गुरुसत्ता के सामने नतमस्तक हुआ या नही सदगुरु को कोई विशेष फर्क नही पडता है, पर फर्क पडता है। तो साधक का क्योकी झुकने का अवसर, खाली होने का अवसर साधक के जिवन आये या न भी आये, इस बात को सदगुरु जानता है। पर साधक नही। हमारी संस्कृती मे हम जिसे भगवान मानते है, वे भी अपने गुरु को मानते थे। याने सदगुरु की संस्कृती भारत मे बहुत पुरानी है, इसी लीये कहा है "गुरु साक्षात परब्रह्म" याने गुरु ही प्रत्यक्ष परमात्मा का रूप होता है।